इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya

शहीद गुंडाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र

Shaheed Gundadhoor College of Agriculture & Research Station

कुम्हरावण्ड, जगदलपुर – 494005 Kumhrawand, Jagdalpur – 494005 (C.G.)

Ph. (O) - 07782 - 229150, (Fax) 229360 (R) 229343 www.naip-sgcars.com, Email - zars_igau@rediffmail.com

क्रमांक – DL- -2014

क्र./श.गु.कृ.महा.एवं अनु.केन्द्र/2013–14/ जगदलपुर दिनांक 21/ 02/2014

बस्तर पठार कृषि जलवायु क्षेत्र के लिए कृषि सलाह सेवा बुलेटिन (14 फरवरी से 21 फरवरी 2014)

पिछले सप्ताह की विशिष्ठ मौसम स्थितियाँ

वर्षा मि.मी.	0.0
अधिकतम तापमान डिग्री. से.	27.3-32.2
न्युनतम तापमान डिग्री. से.	8.0-16.0
सापेक्ष आर्द्रता प्रतिशत	33-98
वायु गति कि.मी./घंटा	2.4-10.3

पिछले सप्ताह कृषि मौसम वेधशाला ,कुम्हरावण्ड में 0 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई। अधिकतम तापमान 27.3 से 32.2 डिग्री सेंग्रे. के बीच रहा। न्यूनतम तापमान 8.0 – 18.0 सेग्रे. के मध्य रहा। सापेक्ष आर्द्रता 33 से 98 प्रतिशत के मध्य दर्ज की गई । वायु गति 2.4 से 10.3 किमी./घंटा के मध्य रही।

कृषि मौसम सलाह :–

रबी फसलें	❖ ग्रीष्मकालीन मूंग की बुवाई हेतू, इसकी उन्नत किस्म – पूसा विशाल, पैरी मूंग। ❖ तोरिया पक कर तैयार हो चूकि है अतः उन्हें काटकर एवं अच्छी तरह सूखाकर भंडारण कर ले। ❖ चना में फली बनना शरू हो गया हो तो एक हल्की सिंचाई कर लें। ❖ मक्का में तना छेंदक का प्रकोप देखा जा रहा हैं इसके नियंत्रण हेतु Phorate 10G@ 2 ls 3 दाने प्रति पौधें की दर से उपयोग करें। ❖ आलू एवं टमाटर में Late Blight नामक रोग दिखाई दे रहा है। इसके नियंत्रण हेतु बाविस्टीन या मेन्कोजेब का छिड़काव करें। ❖ गन्नें की फसल अब काटने की स्थिति में पहुँच गई है। एक साथ कटाई करने हेतु 2–3 लीटर ग्लायफोसेट नामक शाकनॉशी का उपयोग करें। ❖ मक्का का फसल घुटने की ऊँचाई तक पहुच चुका है अतः सिंचाई एवं प्रथम किस्त यूरिया का दे देंवे। कही–कही पर फास्फोरस की कमी वर्तमान में दिखाई दे रहा है, अतः खेत में DAP या SSP की 2 प्रतिशत मात्रा का छिड़काव करे। ❖ मटर में दाना भरने की स्थिति में हल्की सिंचाई करें। ❖ अलसी में फूल आ चूकी है इसी समय अलसी में फल मख्खी का प्रकोप देखा जा रहा हैं, तथा नियंत्रण हेतु **Imidacloprid** 17.8 SL@ 150ml/ha. का उपयोग करें।
काजू एवं फल वाले पौधें	❖ आम एवं काजू में इस समय सिंचाई न करें। ❖ फलदार एवं अन्य बहुउद्देशीय पौधों को सुखे से बचाने के लिए सूक्ष्म सिंचाई विधियों का उपयोग करें। काजू की पत्तियों में छेद करने वाले बीटल एवं इल्लियों का प्रकोप दिखाई दे रहा है। काजू के तनो एवं जड़ भेदक से प्रकोपित पौधे जो सूख गए है उसे पूरी तरह से हटा देंवें तथा अन्य प्रकोपित पौधों में चारकोल तथा मिट्टी तेल (केरोसिन) का 1:2 में मिलाकर या क्लोरोपाईरीफॉस 0.2 प्रतिशत की दर से जमीन के 1 मीटर की ऊँचाई तक लगावें। ❖ वर्षा ऋतु में लगाई गई फसलों जैसे हल्दी, अदरक इत्यादि की खुदाई करें। नारियल में अन्तवर्ती फसल के रूप में जायद की फसलें जैसे कद्दूवर्गीय, लोबिया, ग्वारफल्ली इत्यादि की बुवाई/ पौध रोपण करें। नारियल पौधों में सिंचाई 4–5 दिन के अंतराल में करें। चूहे से बचाव हेतु एल्यूमिनियम फास्फाइड/ रोबान केक का प्रयोग करें।
सब्जी	❖ कद्दूवर्गीय फसलों में सफेद चूर्ण हेतु सलफैक्स 80 प्रतिशत डब्ल्यू बी का उपयोग करें। बैंगन, टमाटर, मिर्च समय पर निराई गुड़ाई करते रहे। निरंतर खेत में नमी का निरिक्षण करें एवं नमी कम होने पर संतुलित मात्रा में सिंचाई की व्यवस्था करें। मिर्च की फसल में पत्ती कुंचन रोग से बचाने के लिए मेटासिस्टॉक्स या रोगोर कीटनाशक का छिड़काव करें। आलू फसल यदि परिपक्व हो रहे हो उस अवस्था में सिंचाई बंद कर दें। कद्दूवर्गीय फसलों (जैसे लौकी, करेला, तरबूज, खरबूज टिण्डा इत्यादि)की बोवाई करें। बसंतकालीन भिण्डी फसल की बोवाई करें जिसके लिये बीजदार 18–20 किग्रा/हे. तथा उन्नत किस्में अर्का अनामिका, वर्षा उपहार एवं परभनी क्रान्ति है।
कन्दीय फसलें	❖ कन्दीय फसलों को हारवेस्टिंग के पश्चात् ठण्डे स्थानों में बीज हेतु भण्डारित करें। ❖ कन्द फसल जैसे कसावा का हारवेस्टिंग कर कन्द को तुरन्त बाजार भेंजे तथा तना कर्तन कटींग को आगामी ऋतु हेतु छायादार स्थान में लगा कर रखें।

22 से 26 फरवरी 2014 तक मौसम पुर्वानुमान बस्तर

मौसम कारक	पुर्वानुमान				
	दिवस –1 22 फरवरी	दिवस –2 23 फरवरी	दिवस –3 24 फरवरी	दिवस –4 25 फरवरी	दिवस –5 26 फरवरी
वर्षा मि.मी.	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	32	32	33	33	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	14	15	16	16	16
कुल बादल की मात्रा (प्रतिशत)	0	50	12	12	12
सापेक्ष आर्द्रता (सुबह/शाम)	86/30	80/29	75/29	65/28	60/27
वायु गति कि. मी./घण्टा एवं दिशा	4/SE	4/SE	2/SE	4/SW	4/S

प्रयोजक –भूमि विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली, सहयोग–अखिल भारतीय समन्वित बारानी खेती परियोजना, हैदराबाद

अधिष्ठाता